

४. लोक प्रशासन की भाषा क्या समझते हैं? इसका राजनीति के साथ क्या संबंध है? वर्णन करें।

OR- लोक प्रशासन और राजनीतिशास्त्र का वर्णन करें?

उत्तर:— लोक प्रशासन एवं राजनीति संबंध:

राजनीति और लोक प्रशासन के बीच ऐसा संबंध है इस विषय में विचारकों में मतभेद है। कुछ विचारकों के मतानुसार दोनों के बीच गहरा संबंध है, इनके अनुसार लोक प्रशासन के अध्ययन के बाद ही राजनीतिशास्त्र का अध्ययन पूर्ण माना जा सकता है। जबकि लोक प्रशासन के कुछ प्राचीन विद्वान जैसे विल्सन, गुडनो, हादि ने राजनीति और लोक प्रशासन को अलग-अलग रखने की सलाह दीया है। विल्सन के अनुसार—

“प्रशासन राजनीति के यथार्थ परिधि से बाहर है। प्रशासनिक समस्याएँ राजनीति समस्याएँ नहीं हैं। यद्यपि लोक प्रशासन के द्वारा प्रशासन के लिए कार्य किया जाता है तथापि इसे प्रशासनिक कार्यों के साथ सीधे सम्बन्धित नहीं मानना चाहिए।

आधुनिक युग के विद्वानों ने उपरोक्त दृष्टिकोण की आलोचना की है। ऐसे विद्वानों ने राजनीति और प्रशासन के बीच गहरा संबंध बताया है। इनके अनुसार राजनीति और प्रशासन एक-दूसरे के सहयोग के बिना निष्क्रिय बन जाते हैं। राजनीति का प्रमुख कार्य नीति-निर्माण करना है जो प्रशासन के सहयोग के बिना नहीं हो सकता। लोक प्रशासन के प्रसिद्ध विद्वान लुथर गुलिक का कहना है कि न तो राजनीति को प्रशासन से बाहर किया जा सकता है और न ही प्रशासन को बाहर किया जा सकता है जो राजनीति से। यह बात सही है कि राजनीति प्रशासन की व्यवस्थाओं की जाए, पारंपरिक दृष्टिकोण से यह संभव नहीं है।

एक अन्य विद्वान विल्सन के अनुसार— “सरकार के कार्यों के बीच कोई स्पष्ट रेखा खींचना असंभव है। सरकार निरंतर गति से चलने वाली एक प्रक्रिया है। यह बात सही है कि



हिंसा भी प्रक्रिया में बहुत ही मंजिलें होती हैं।

व्यवस्थापन एक मंजिल है जो प्रभासन दूसरी, लेकिन वे एक दूसरे से मिला हुई हैं और कुछ स्थानों पर दोनों में भेद नहीं किया जा सकता है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि राजनीति और प्रभासन के बीच पूर्ण विभाजन नहीं किया जा सकता, इस संबंध में इतना ही कहा जा सकता है कि सत प्रतिभत राजनीति से प्रभावित प्रभासन का स्थापना करना उतना ही अनिवार्य है जितना सत प्रतिभत राजनीति विहीन दृष्टिकोण को अपनाना।

उपरोक्त आधुनिक दृष्टिकोण के आधार पर लोकप्रभासन और राजनीति का वर्णन निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

1. राजनीति और प्रभासन की सफलता एक-दूसरे पर निर्भर करती है, वास्तव में प्रभासन की सफलता राजनीति की सफलता है या प्रभासन की दुर्बलता राजनीति की दुर्बलता है। इसलिए के लिए राजनीति द्वारा निर्मित ऐसी नीतियाँ जो प्रभासनिक अनुभवों पर आधारित नहीं हैं वह गहनतम परिणामों को जन्म देती हैं।
2. जिस तरह राजनीति प्रभासन से प्रभावित होती है, उसी तरह प्रभासन भी राजनीति से प्रभावित होता है। प्रभासनिक कर्मचारी भासन विधान के स्वरूप की अवहेलना करके अपने स्वतंत्र सिद्धांतों पर ~~अपने~~ आचरण नहीं कर सकते।
3. संविधान और प्रभासन में भी धनित संबंध होता है। पढ़ें, लिखें और योग्य व्यक्ति भी दोनों में अंतर नहीं कर सकते, यद्यपि लोक प्रभासन को संविधान का भाग नहीं कहा जा सकता, तथापि इसके स्वरूप और संगठन का निश्चय संविधान द्वारा ही होता है।
4. स्थानिय प्रभासन के क्षेत्र में भी राजनीति और प्रभासन का क्षेत्र एक दूसरे के पूरक है।
5. अंतराष्ट्रीय संगठन के कारण भी राजनीति और प्रभासन में धनित संबंध स्थापित हो गया है। आज के इस अंतराष्ट्रवाद के युग में लोक प्रभासन का संबंध अंतराष्ट्रीय समस्याओं से भी जुड़ गया है।



निष्कर्ष:—

राजनीति और प्रशासन के बीच संबंधों संबंधों से जुड़े उपरिष्ठ तथ्यों के अध्ययन करने के बाद यह कहा जा सकता है कि दोनों के बीच घनिष्ट संबंध है। लोक प्रशासन को पूर्ण रूप से अराजनीतिक बनाया नहीं संभव है और नही उसकी आवश्यकता है। दोनों विषयों का विकास एक-दूसरे के सहयोग पर ही संभव है। जब तक नीति निर्धारण का अंतिम अधिकार राजनीतिज्ञों के पास है। जब तक प्रजातंत्र को मय नहीं है, और जब तक प्रशासन के विभिन्न कानून को राजनीतिज्ञ स्वीकार करते हैं तब तक प्रशासकों को नीति चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। अतः दोनों के बीच सहयोग ही कामना का विकास करने ही उचित है।